दाफिउल बला

(बला का निवारण)

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

दाफ़िउल बला
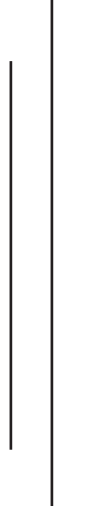
लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	: दाफ़िउल बला
Name of book	: Dafeul Bala
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
Writer	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mau'ud Alaihissalam
अनुवादक	: डा अन्सार अहमद पी.एच.डी आनर्स इन अरबिक
Translator	: Dr Ansar Ahmad, Ph.D, Hons in Arabic
टाईपिंग, सैटिंग	: नादिया परवेज़ा
Typing Setting	: Nadiya Perveza
संस्करण तथा वर्ष	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) अगस्त 2018 ई०
Edition. Year	: 1st Edition (Hindi) August 2018
संख्या, Quantity	: 1000
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher	: Nazarat Nashr-w-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद श्री डॉ० अन्सार अहमद ने किया है और तत्पश्चात मुकर्रम शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), मुकर्रम फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), मुकर्रम अली हसन एम. ए. और मुकर्रम नसीरुल हक़ आचार्य ने इसकी प्रूफ़ रीडिंग और रीवियु आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

पुस्तक परिचय

दाफ़िउल बला-व-मैयार अहलिलइस्तिफ़ा

यह पुस्तक आपने अप्रैल 1902 ई. में प्रकाशित की जबकि पंजाब में ताऊन का बहुत ज़ोर था। इस पुस्तक में ताऊन से संबंधित आप ने उन इल्हामों का वर्णन किया है जिन में ताऊन का संक्रामक रोग फैलने के बारे में भविष्यवाणी थी। और यह भी बताया गया था कि ताऊन संसार में इसलिए आई है कि ख़ुदा के मसीह का न केवल इन्कार किया गया अपितु उसे दुख दिया गया, उसे क़त्ल करने की योजनाएं बनाई गईं, उसका नाम काफ़िर और दज्जाल रखा गया। और पहली किताबों में भविष्यवाणी पाई जाती थी कि मसीह मौऊद के प्रादुर्भाव के समय भयंकर ताऊन पड़ेगी और फ़रमाया कि उसका निश्चित उपचार तो यही है कि इस मसीह को सच्चे हृदय और निष्कपटतापूर्वक स्वीकार किया जाए और अपने जीवनों में एक रूहानी परिवर्तन पैदा किया जाए तथा ख़ुदा को इल्हाम के आधार पर आपने यह घोषणा की -

"ख़ुदा तआला बहरहाल जब तक कि ताऊन संसार में रहे यद्यपि सत्तर वर्ष तक रहे क़ादियान को उसकी भयंकर तबाही से सुरक्षित रखेगा।"

(इसी जिल्द का पृष्ठ-238)

और फ़रमाया -

"मेरा यही निशान है कि प्रत्येक विरोधी चाहे वह अमरोहा में रहता है, चाहे अमृतसर में, चाहे देहली में, चाहे कलकत्ता में, चाहे लाहौर में, चाहे गोलड़ा में और चाहे बटाला में यदि वह क़सम खा कर कहेगा कि उसका अमुक स्थान ताऊन से मुक्त रहेगा तो अवश्य वह स्थान ताऊन में ग्रस्त हो जाएगा। क्योंकि उसने ख़ुदा तआला के मुकाबले पर धृष्टता की। (पृष्ठ-238)

परन्तु किसी विरोधी को ऐसी घोषणा करने का साहस न हुआ और ताऊन का संक्रामक रोग पहली किताबों की भविष्यवाणियों के अनुसार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक ज़बरदस्त निशान सिद्ध हुआ।

चेतावनी

जिस सन्देश को हम इस समय अपने देश के प्रिय लोगों के पास इस पुस्तक के द्वारा पहुंचाना चाहते हैं उसके बारे में हमें अंबिया अलैहिस्सलाम के पुराने अनुभव के अनुसार यह सिद्ध है कि इस समय हमारी सहानुभूति की क़द्र यही होगी कि फिर दोबारा हम इस्लाम के मौलवियों और ईसाई धर्म के पादरियों तथा हिन्दू धर्म के पंडितों से गालियां सुनें और भिन्न-भिन्न प्रकार की कष्टदायक उपाधियों से याद किए जाएं। हमें पहले से भली भांति ज्ञात है कि ऐसा ही होगा। परन्तु हमने मानव जाति की हमदर्दी को इस बात से अग्रसर रखा है कि सामान्य गालियों से हम सताए जाएं। क्योंकि इसके बावजूद यह भी संभावना है कि इन सैकड़ों और हज़ारों गालियां देने वालों में से कुछ ऐसे भी पैदा हो जाएं कि ऐसे समय में कि जब आकाश पर से एक अग्नि की वर्षा हो रही है अपितु अगले जाड़े में तो और भी अधिक बरसने की आशा है। इस पुस्तक को ध्यानपूर्वक पढ़ें और अपने इस नसीहत करने वाले मेरहबान पर शीघ्र नाराज़ न हों और जिस नुस्खे को वह प्रस्तुत करता है उसे परख लें। क्योंकि इस हमदर्दी के बदले में कोई मज़दूरी या प्रतिफल उन से नहीं मांगा गया, केवल सच्ची निष्कपटता और नेक नीयत से मनुष्यों की जान छुड़ाने के लिए एक परखा हुआ तथा पवित्र प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है। तो जिस हालत में रोगों में उपचार के लिए कुछ जानवरों का मूत्र भी पी लेते हैं तथा बहुत सी गन्दी वस्तुओं को इस्तेमाल कर लेते हैं तो इस स्थिति में उनकी क्या हानि है कि

अपने प्राण बचाने के लिए अपने लिए इस पवित्र उपचार को ग्रहण करें और यदि वे नहीं करेंगे तब भी बहर हाल इस मुकाबले के समय एक दिन उन्हें मालूम होगा कि इन समस्त धर्मों में से कौन सा ऐसा धर्म है जिसका सिफ़ारिश करना मुन्ज्जी (मुक्ति दिलाने वाला) के महान शब्द का चरितार्थ होना सिद्ध हो सकता है। सच्ची मुक्ति दिलाने वाले को हर व्यक्ति चाहता है और उस से प्रेम करता है। अतः निस्सन्देह अब दिन आ गए हैं कि सिद्ध हो कि सच्ची मुक्ति दिलाने वाला कौन है। निस्सन्देह हम मसीह इब्ने मरयम को एक सच्चा आदमी जानते हैं जो अपने युग के अधिकतर★ लोगों

★हाशिया :- स्मरण रहे यह जो हम ने कहा कि हज़रत ईसा अलैहस्सलाम अपने युग के बहुत से लोगों की अपेक्षा अच्छे थे। यह हमारा बयान केवल सुधारणा के तौर पर है अन्यथा संभव है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के समय में ख़ुदा तआला की पृथ्वी पर कुछ ईमानदार अपनी ईमानदारी और ख़ुदा से संबंध में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से भी उच्चतम और श्रेष्ठतम हों। क्योंकि अल्लाह तआला ने उनके बारे में फ़रमाया है

وَجِيْهًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ (आलेइमरान-46)

जिसके मायने ये हैं कि उस युग के सानिध्य प्राप्त लोगों सें से यह भी एक थे। इस से यह सिद्ध नहीं होता कि वह सब सानिध्य प्राप्त लोगों से बढ़कर थे अपितु इस बात की संभावना निकलती है कि उनके युग के कुछ सानिध्यप्राप्त उन से अच्छे थे स्पष्ट है कि वह केवल बनी इस्राईल की भेड़ों के लिए आए थे और दूसरे देशों तथा क़ौमों से उनको कुछ संबंध न था। तो संभव अपितु अनुमान के करीब है कि कुछ अंबिया जो لَمْ نَقْصُصْ (अलमोमिन-79) में सम्मिलित हैं वे उन से अच्छे और अधिक श्रेष्ठ होंगे। और जैसा कि हज़रत मूसा के मुकाबले पर अन्ततः एक इन्सान निकल आया जिसके बारे में ख़ुदा ने عَلَّمْنَاهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا (अलकहफ़-66) फ़रमाया। तो फिर हज़रत ईसा

से अच्छा था। والله اعلم परन्तु वह वास्तविक मुक्ति दिलाने वाला नहीं था। यह उस पर लांछन है कि वह वास्तविक मुक्ति दिलाने

शेष हाशिया - के बारे में जो मूसा से कमतर और उसके शरीअत के अनुयायी थे और स्वयं कोई पूर्ण शरीअत न लाए थे। ख़त्न: और फ़िक़्र: के मामले, विरासत सुअर का निषेध इत्यादि में हज़रत मूसा की शरीअत के अधीन थे क्योंकर कह सकते हैं कि वह अपने समय के समस्त सत्यनिष्ठों से बढ़कर थे। जिन लोगों ने उनको ख़ुदा बनाया है जैसे ईसाई या वे जिन्होंने उन्हें अकारण ख़ुदाई विशेषताएं दीं हैं। जैसा कि हमारे विरोधी और ख़ुदा के विरोधी नाम के मुसलमान वे यदि उनको ऊपर उठाते-उठाते आकाश पर चढ़ा दें या अर्श पर बिठा दें या ख़ुदा की तरह पक्षियों का पैदा करने वाला ठहराएं तो उनको अधिकार है। मनुष्य जब शर्म और लज्जा को छोड़ दे तो जो चाहे कहे और जो चाहे करे, किन्तु मसीह की ईमानदारी अपने युग में दूसरे ईमानदारों से बढ़कर सिद्ध नहीं होती। अपितु यह्या नबी को इस पर एक श्रेष्ठता है क्योंकि वह शराब नहीं पीता था और कभी नहीं सुना गया कि किसी वैश्या स्त्री ने आकर अपनी कमाई के माल से उसके सर पर इत्र मला था या हाथों और अपने सर के बालों से उसके शरीर को स्पर्श किया था। या कोई बेलगाव औरत उसकी सेवा करती थी। इसी कारण से ख़ुदा ने क़ुर्आन में यह्या का नाम हसूर रखा, परन्तु मसीह का यह नाम न रखा। क्योंकि ऐसे क़िस्से इस नाम के रखने से रोक थे। फिर यह कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने यह्या के हाथ पर जिसे ईसाई यूहन्ना कहते हैं जो बाद में एलिया बनाया गया अपने पापों से तौब: की थी और उसके विशेष मुरीदों में सम्मिलित हुए थे। यह बात हज़रत यह्या की श्रेष्ठता की बड़ी स्पष्टता से सिद्ध करती है। क्योंकि इसके मुक़ाबले पर यह सिद्ध नहीं किया गया कि यह्या ने भी किसी के हाथ पर तौब: की थी। तो उसका मासूम होना स्पष्ट बात है। और मुसलमानों में यह जो प्रसिद्ध है कि ईसा और उसकी मां शैतान के स्पर्श से पवित्र हैं, इसके मायने मूर्ख लोग नहीं समझते। असल बात यह है कि गन्दे यहूदियों ने हज़रत ईसा और उन की मां

वाला था। वास्तविक मुक्ति दिलाने वाला हमेशा और कयामत तक मुक्ति का फल खिलाने वाला वह है जो हिजाज़ की पृथ्वी पर पैदा हुआ था और समस्त संसार और समस्त युगों की मुक्ति के लिए आया था और अब भी आया परन्तु ज़िल्ल के तौर पर। **ख़ुदा उसकी बरकतों से सम्पूर्ण पृथ्वी को लाभान्वित करे। आमीन**

ख़ाकसार - मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी।

शेष हाशिया - पर बड़े ही गन्दे आरोप लगाए थे और दोनों के बारे में नऊज़ुबिल्लाह शैतानी कार्यों का आरोप लगाते थे। अतः इस झूठ का खण्डन आवश्यक था। तो इस हदीस के इस से अधिक कोई मायने नहीं कि यह गन्दे आरोप जो हज़रत ईसा और उनकी मां पर लगाए गए हैं ये सही नहीं है, अपितु वे इन अर्थों से शैतान के स्पर्श से पवित्र हैं और इस प्रकार के पवित्र होने की घटना किसी अन्य नबी के सामने नहीं आई। इसी से

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिलकरीम

ताऊन

چو آمد از خدا طاعون بہ بیں از چشم اکرامش
توخود ملعونی اے فاسق چرا ملعوں نہی نامش

زمانِ توبہ ُووقتِ صلاح وترک خبث است ایں
کسے کو بربدی نہ بینم نیک انجامش

इस भयानक रोग के बारे में जो देश में फैलता जाता है लोगों की भिन्न-भिन्न रायें हैं। डॉक्टर लोग जिन के विचार केवल भौतिक उपायों तक सीमित हैं इस बात पर बल देते हैं कि पृथ्वी में केवल प्राकृतिक कारणों से ऐसे कीटाणु पैदा हो गए हैं कि सर्वप्रथम चूहों पर अपना दुष्प्रभाव पहुंचाते हैं★ और फिर मनुष्यों में मृत्यु का सिलसिला जारी हो जाता है और धार्मिक विचारों से इस रोग का कुछ संबंध नहीं। अपितु चाहिए कि अपने घरों और नालियों को हर प्रकार की गन्दगी और दुर्गन्ध से बचाएं और स्वच्छ रखें और फ़िनायल इत्यादि से पवित्र करते रहें और मकानों को आग से गर्म रखें और ऐसा बनाएं कि जिनमें हवा भी पहुंच सके और प्रकाश भी। और किसी मकान में

★**हाशिया :-** चिकित्सा के नियमों के अनुसार ताऊन के रोग की पहचान के लिए आवश्यक है कि जिस दुर्भाग्यशाली गांव या शहर या उसके किसी भाग में यह घातक रोग फूट पड़े उसमें इस से कई दिन पूर्व मरे हुए चूहे पाए जाएं। तो यदि उदाहरण के तौर पर केवल ज्वर से किसी गांव में कुछ मौत की घटनाएं हो जाएं और चूहे मरते न देखे जाएं तो वह ताऊन नहीं है अपितु ज्वर के प्रकारों में से एक घातक ज्वर है। इसी से

इतने लोग न रहें कि उन के मुंह की भाप और मल-मूत्र इत्यादि से कीटाणु प्रचुर मात्रा में पैदा हो जाएं और भोजन न खाएं। और सब से अच्छा उपचार यह है कि टीका लगवा लें, और यदि मकानों में मुर्दा चूहे पाएं तो उन मकानों को छोड़ दें और उचित है कि बाहर खुले मैदानों में रहें और मैले कुचैले कपड़ों से बचें और यदि कोई व्यक्ति किसी प्रभावित या ग्रसित मकान से उनके शहर या गांव में आए तो उसको अन्दर न आने दें और यदि कोई ऐसे गांव या शहर का इस रोग से बीमार हो जाए तो उसे बाहर निकालें और उससे मिलने-जुलने से बचें। तो ताऊन का उपचार उन के नज़दीक जो कुछ है यही है। ये तो बुद्धिमान डॉक्टरों और चिकित्सकों की राय है जिसे हम न तो एक पर्याप्त और स्थायी उपचार के रंग में समझते हैं और न केवल बेफ़ायदा ठहराते हैं। पर्याप्त और स्थायी उपचार इसलिए नहीं समझते कि अनुभव बता रहा है कि कुछ लोग बाहर निकलने से भी मरे हैं और कुछ स्वच्छता को अनिवार्य रखते-रखते भी इस संसार से कूच कर गए तथा कुछ ने बड़ी आशा से टीका लगवाया और फिर क़ब्र में जा पड़े। तो कौन कह सकता है या कौन हमें सांत्वना दे सकता है कि ये समस्त उपाय पर्याप्त उपचार हैं। अपितु इक़रार करना पड़ता है कि यद्यपि ये समस्त तरीक़े किसी सीमा तक लाभप्रद हैं परन्तु यह ऐसा उपाय नहीं है जिसको ताऊन को देश से दूर करने के लिए पूर्ण सफलता कह सकें।

इसी प्रकार ये उपाय मात्र बेफ़ायदा भी नहीं हैं क्योंकि जहां-जहां ख़ुदा की इच्छा है वहां-वहां उसका फ़ायदा भी महसूस हो रहा है परन्तु वह फ़ायदा कुछ अधिक प्रशंसनीय नहीं। उदाहरणतया यद्यपि

यह सच है कि जैसे यदि सौ लोगों ने टीका लगवाया है और दूसरे इतने ही लोगों ने टीका नहीं लगवाया है तो जिन्होंने टीका नहीं लगवाया उनमें मौतें अधिक पाई गईं और टीका लगवाने वालों में कम। परन्तु चूंकि टीके का प्रभाव अधिक से अधिक दो या तीन महीने तक है। इसलिए टीके वाला भी बार-बार ख़तरे में पड़ेगा जब तक इस संसार से कूच न कर जाए। अन्तर केवल इतना है कि जो लोग टीका नहीं लगवाते वे एक ऐसे जहाज़ पर सवार हैं कि जो उदाहरणतया चौबीस घंटे तक उनको दारुल फ़ना (मृत्यु-गृह) तक पहुंचा सकता है। वे जो लोग टीका लगवाते हैं वे मानो ऐसे धीरे चलने वाले टट्टू पर चल रहे हैं जो चौबीस दिन तक उसी स्थान में पहुंचा देगा। बहर हाल ये समस्त उपाय जो डाक्टरी तौर पर अपनाए गए हैं न तो पर्याप्त और संतोषजनक हैं और न मात्र निकम्मे और बेफ़ायदा हैं। और चूंकि ताऊन शीघ्र-शीघ्र देश को खाती जाती है, इसलिए मानव जाति की हमदर्दी इसी में है कि किसी अन्य उपाय पर विचार किया जाए जो इस विनाश से बचा सके।

और मुसलमान लोग जैसा कि मियां शम्सुद्दीन सेक्रेटरी अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम लाहौर के विज्ञापन से समझा जाता है, जिसे उन्होंने इसी माह अप्रैल 1902 ई. में प्रकाशित किया है इस बात पर बल देते हैं कि मुसलमानों के समस्त फ़िर्क़े शिया, सुन्नी मुक़ल्लिद और ग़ैर मुक़ल्लिद मैदानों में जाकर अपने-अपने धर्म के नियमानुसार दुआएं करें और एक ही तिथि में एकत्र होकर नमाज़ पढ़ें। तो बस यह ऐसा नुस्ख़ा है कि इस से सहसा ताऊन दूर हो जाएगी परन्तु एकत्र कैसे हों इसका कोई उपाय नहीं बताया गया। स्पष्ट है कि वहाबी समुदाय

के मतानुसार तो फ़ातिहा ख़्वानी के बिना नमाज़ दुरुस्त ही नहीं। तो इस स्थिति में उनके साथ हनफ़ियों की नमाज़ कैसे हो सकती है। क्या परस्पर उपद्रव नहीं होगा। इस के अतिरिक्त विज्ञापन के लिखने वाले ने यह व्यक्त नहीं किया कि हिन्दू इस रोग के निवारण के लिए क्या करें। क्या उनको अनुमति है या नहीं कि वे भी उस समय अपनी मूर्तियों से सहायता मांगें और ईसाई कौन सा तरीक़ा अपनाएं और जो फ़िर्क़े हज़रत हुसैन या अली[रज़ि.] को आवश्यकताएं पूर्ण करने वाला समझते हैं और मुहर्रम★ के महीने में मनोकामनाओं के लिए हज़ारों दरख़्वास्तें गुज़ारा करते हैं या जो मुसलमान सय्यिद अब्दुल क़ादिर जीलानी की पूजा करते हैं या जो शाह मदार या सख़ी सर्वर को पूजते हैं वे क्या करें और क्या अब ये समस्त फ़िर्क़े दुआएं नहीं करते अपितु प्रत्येक फ़िर्क़ा भयभीत होकर अपने-अपने माबूद (उपास्य) को पुकार रहा है। शियों के मुहल्लों में सैर करो, कोई ऐसा घर नहीं होगा जिसके दरवाज़े पर यह शेर चिपका हुआ नहीं होगा -

لِی خمسةٌ اُطفَی بها حَرَّالوباءالحاطمه
اَلْمُصْطَفیٰ وَالْمُرتَضٰی وَابْنَا هما وَالْفَاطِمَه

★**हाशिया :-** यह मुहर्रम का महीना बड़ा मुबारक महीना है। तिरमिज़ी में इसकी श्रेष्ठता के बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से यह हदीस लिखी है कि

فیه یوم تاب الله فیه عَلٰی قومٍ و یتوب فیه علٰی قومٍ اٰخرین

अर्थात् मुहर्रम में एक ऐसा दिन है जिसमें ख़ुदा ने पहले युग में एक क़ौम को बला से मुक्ति दी थी और ऐसा ही निश्चित है कि इसी महीने में एक बला से एक और क़ौम को मुक्ति मिलेगी। क्या आश्चर्य कि इस बला से ताऊन अभिप्राय हो और ख़ुदा के मामूर का आज्ञापालन करके वह बला देश से जाती रहे। इसी से

मेरे उस्ताद एक बुज़ुर्ग शिया थे उनका कहना था कि वबा का इलाज केवल तवल्ला और तबर्रा है। अर्थात् अहले बैत के प्रेम को इबादत की सीमा तक पहुंचा देना और सहाबा रज़ि. को गालियां देते रहना। इस से उत्तम कोई इलाज नहीं। और मैंने सुना है कि बम्बई में जब ताऊन आरंभ हुई है तो सर्वप्रथम लोगों में यही विचार पैदा हुआ था कि यह इमाम हुसैन का चमत्कार है क्योंकि जिन हिन्दुओं ने शियों से कुछ विवाद किया था उनमें ताऊन आरंभ हो गई थी। फिर जब इस रोग ने शियों में भी कदम रखा तब तो या हुसैन के नारे समाप्त हो गए।

यों तो मुसलमानों के विचार हैं जो ताऊन को दूर करने के लिए सोचे गए हैं और ईसाइयों के विचारों की अभिव्यक्ति के लिए अभी एक विज्ञापन पादरी वाइट ब्रेख़्त साहिब और उनकी अंजुमन की ओर से निकला है। और वह यह कि ताऊन को दूर करने के लिए अन्य कोई उपाय पर्याप्त नहीं सिवाए इसके कि हज़रत मसीह को ख़ुदा मान लें और उनके कफ़्फ़ार: पर ईमान ले आएं।

और हिन्दुओं में से आर्यमत के लोग पुकार-पुकार कर कह रहे हैं कि ताऊन की बला वेद को त्याग देने के कारण है। समस्त फ़िर्क़ों को चाहिए कि वेदों की सत्य विद्या पर ईमान लाएं और समस्त नबियों को नऊज़ुबिल्लाह झूठा ठहराएं। तब इस उपाय से ताऊन दूर हो जाएगी।

और हिन्दुओं में जो सनातन धर्म फ़िर्क़ा (सम्प्रदाय) है उसमें ताऊन के निवारण के बारे में जो राय व्यक्त की गई है यदि हम 'अखबार-ए-आम' अखबार न पढ़ते तो शायद इस अद्भुत राय से

अनभिज्ञ रहते। और वह राय यह है कि यह ताऊन की बला गाय के कारण आई है। यदि सरकार यह कानून पास कर दे कि इस देश में गाय कदापि-कदापि ज़िब्ह न की जाए तो फिर देखिए कि ताऊन क्योंकर दूर हो जाती है। अपितु इस अखबार में एक स्थान पर लिखा है कि एक व्यक्ति ने गाय को बोलते सुना कि वह कहती है कि मेरे कारण ही इस देश में ताऊन आई है।

अब हे पाठकगण! स्वयं ही सोच लो कि इतने विभिन्न कथनों और दावों से किस कथन को संसार के सामने स्पष्ट एवं व्यापक तौर पर फ़ायदा हो सकता है। ये समस्त आस्थागत बातें हैं और संवेदनशील समय में जब तक कि संसार इन आस्थाओं का निर्णय करे स्वयं संसार का निर्णय हो जाएगा। इसलिए वह बात स्वीकार करने योग्य है जो शीघ्र ही समझ में आ सकती है और जो अपने साथ कोई प्रमाण रखती है अतः वह बात मैं प्रमाण सहित प्रस्तुत करता हूं चार वर्ष हुए कि मैंने एक भविष्यवाणी प्रकाशित की थी कि पंजाब में भयंकर ताऊन आने वाली है और मैंने इस देश में ताऊन के काले वृक्ष देखे हैं जो प्रत्येक शहर और गांव में लगाए गए हैं। यदि लोग तौबः करें तो ये रोग दो जाड़ों से अधिक नहीं हो सकता। ख़ुदा इसे दूर कर देगा परन्तु तौबः करने की बजाए मुझे गालियां दी गईं। और सख्त गालियों के विज्ञापन प्रकाशित किए गए जिनका परिणाम ताऊन की यह हालत है जो अब देख रहे हो ख़ुदा की वह पवित्र वह्यी जो मुझ पर उतरी उसकी इबादत यह है -

اِنَّ اللّٰہَ لَا یُغَیِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰی یُغَیِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِہِمْ اِنَّہٗ اٰوَی الْقَرْیَۃَ

अर्थात् ख़ुदा ने यह इरादा किया है। इस ताऊन की बला को

कदापि दूर नहीं करेगा जब तक लोग उन विचारों को दूर न करें जो उनके दिलों में हैं। अर्थात् जब तक वे ख़ुदा के मामूर और रसूल को स्वीकार न कर लें तब तक ताऊन दूर नहीं होगी और वह शक्तिमान ख़ुदा क़ादियान को ताऊन की तबाही★ से सुरक्षित रखेगा। ताकि

★**हाशिया :- اٰوٰی** (आवा) अरबी शब्द है जिस के मायने हैं तबाही और अस्त-व्यस्त होने से बचाना और अपनी शरण में ले लेना। यह इस बात की ओर संकेत है कि ताऊन की क़िस्मों में से वह ताऊन बड़ी विनाशकारी है जिसका नाम **ताऊन जारिफ** है अर्थात् झाड़ू देने वाली जिससे लोग जगह-जगह भागते हैं और कुत्तों की तरह मरते हैं। यह हालत इन्सानी सहनशीलता से बढ़ जाती है। तो इस ख़ुदाई कलाम में वादा है कि यह हालत कभी क़ादियान पर नहीं आएगी। इसकी व्याख्या यह दूसरा इल्हाम करता है कि **لولاالاکرام لھلک المقام** अर्थात् यदि मुझे इस सिलसिले के सम्मान का पास न होता तो मैं क़ादियान को भी तबाह कर देता। इस इल्हाम से दो बातें समझी जाती हैं -

(1) प्रथम यह कि कुछ हानि नहीं कि इन्सान की बर्दाश्त की सीमा तक कभी क़ादियान में भी कोई घटना इक्का-दुक्का तौर पर हो जाए जो विनाशकारी न हो और भागने एवं अस्त-व्यस्त होने का कारण न हो। क्योंकि एक दो घटना न होने का आदेश रखती है।

(2) द्वितीय यह कि यह बात आवश्यक है कि जिन देहात और शहरों में क़ादियान की अपेक्षा बहुत उद्दण्ड, दुष्ट, अत्याचारी, व्यभिचारी, उपद्रवी और इस सिलसिले के खतरनाक शत्रु रहते हैं उनके शहरों या देहात में अवश्य विनाशकारी ताऊन फूट पड़ेगी, यहां तक कि लोग बोखला कर हर ओर भागेंगे। हमने आवा क शब्द जहां तक विशाल है उसके अनुसार यह मायने कर दिए हैं और हम दावे से लिखते हैं कि क़ादियान में कभी ताऊन-जारिफ नहीं पड़ेगी जो गांव वीरान करने वाली और खा जाने वाली होती है। परन्तु इसके मुकाबले पर अन्य शहरों और देहात में जो अत्याचारी और उपद्रवी हैं अवश्य भयंकर रूप पैदा होंगे। समस्त संसार में एक क़ादियान है जिसके लिए यह वादा हुआ। **فالحمدللہ علٰی ذٰلک** इसी से

तुम समझो कि क़ादियान इसलिए सुरक्षित रखा गया कि वह ख़ुदा का रसूल और उसका मनोनीत क़ादियान में था। अब देखो तीन वर्ष से सिद्ध हो रहा है कि वे दोनों पहलू पूरे हो गए। अर्थात् एक ओर समस्त पंजाब में ताऊन फैल गई और दूसरी ओर इसके बावजूद कि क़ादियान के चारों ओर दो-दो मील की दूरी पर ताऊन का ज़ोर हो रहा है परन्तु क़ादियान ताऊन से पवित्र है। अपितु आज तक जो व्यक्ति ताऊन से ग्रस्त बाहर से क़ादियान में आया वह भी अच्छा हो गया। क्या इस से बढ़कर कोई और सबूत होगा कि जो बातें आज से चार वर्ष पूर्व कही गई थीं वे पूरी हो गईं अपितु ताऊन की सूचना आज से बाईस वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में भी दी गई है★ और यह गैब (परोक्ष) का ज्ञान ख़ुदा के अतिरिक्त किसी अन्य की शक्ति में नहीं। अत: इस रोग के निवारण के लिए वह सन्देश जो ख़ुदा ने मुझे दिया है वह यही है कि लोग मुझे सच्चे दिल से मसीह मौऊद मान लें। यदि मेरी ओर से भी बिना किसी प्रमाण के केवल दावा

★**हाशिया :-** आज से दस वर्ष पूर्व एक हरे विज्ञापन में जो मेरी ओर से प्रकाशित हुआ था ताऊन की ख़बर दी गई थी और वह यह है -

اصنع الفلك بأعيننا ووحينا ان الذين يبايعونك انّما يبايعون الله يَدُ الله فوق اَيْدِيْهِمْ

अर्थात् एक नौका मेरे आदेश और आंखों के सामने बना जो आने वाले संक्रामक रोग बचाएगी। जो लोग तुझ से बैअत करते हैं वे मुझ से बैअत करते हैं, यह तेरा हाथ नहीं अपितु मेरा हाथ है जो उनके हाथों पर रखा जाता है। इसी ख़ुदा के कलाम का एक वाक्य बराहीन अदहमदिया में बतौर भविष्यवाणी मौजूद है और वह यह है

ولا تخاطبنی فی الذین ظلموا انّھم مغرقون

अर्थात् जो लोग ज़ुल्म, उद्दण्डता, व्यभिचार और अवज्ञा से नहीं रुकते मेरे आगे कुछ सिफारिश न कर क्योंकि वे डुबाए जाएंगे। इसी से

होता जैसा कि मियां शम्सुद्दीन सेक्रेटरी हिमायत-ए-इस्लाम लाहौर ने अपने विज्ञापन में या पादरी वाइट ब्रेख़त साहिब ने अपने विज्ञापन में किया है तो मैं भी उनकी तरह एक व्यर्थवादी ठहरता परन्तु मेरी वे बाते हैं जिनको मैंने समय से पूर्व वर्णन किया और आज वे पूरी हो गईं। तत्पश्चात् इन दिनों में भी मुझे ख़ुदा ने ख़बर दी। अतः अल्लाह तआला फ़रमाता है -

ماكان الله ليعذبهم وانت فيهم انه اوَى القرية لولاالاكرام لهلك المقام۔ انى اناالرحمن دافع الاذى انى لا يخاف لدّى المرسلون انّى حفيظٌ انى مع الرسول اقوم والوم من يلوم النفوس تصنع الَّا الذين اٰمنواولم يلبسواايمانهم بظلم اولئك لهم الامن وهم مهتدون۔ اناناتى الارض ننكسها من اطرافها انى اجهزالجيش فاصبحوافى دارهم جاثمين۔ سنريهم اٰياتنا فى الاٰفاق وفى انفسهم نصرمن الله وفتح مبين انى يايعتك بايعنى ربّى۔ انت منى بمنزلة اولادى★ انت منّى

★**हाशिया :-** स्मरण रहे कि ख़ुदा तआला बेटों से पवित्र है न उसका कोई भागीदार है और न बेटा है और न किसी को अधिकार पंहुचता है कि वह यह कहे कि मैं ख़ुदा हूं या ख़ुदा का बेटा हूं। परन्तु यह वाक्य इस जगह अवास्तविक और रूपक के वर्ग में से है। ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपना हाथ बताया और फ़रमाया **يَدُالله فوق ايدهم** (अलफ़त्ह-11) ऐसा ही बजाए **قل ياعبادالله** के **ياعبادى**भी कहा और यह भी फ़रमाया

فَاذْكُرُوالله كَذِكْرِكُمْ اٰبَاءَكُمْ

तो ख़ुदा के उस कलाम को होशियारी और सावधानी से पढ़ो और उपमाओं के वर्ग में से समझ कर ईमान लाओ और उसकी हालत में हस्तक्षेप न करो और वास्तविकता ख़ुदा के सुपुर्द कर दो और विश्वास रखो कि ख़ुदा

وانامنك۔ عسی الن یبعثك ربك مقاماً محمودًا۔ الفوق معك والحت مع اعدائك فاصبر حتّٰی یأتِی اللہ بامرہ۔ یاتی علیٰ جھنم زمان لَیۡسَ فیھا احدٌ۔

अनुवाद – ख़ुदा ऐसा नहीं कि क़ादियान के लोगों को अज़ाब दे हालांकि तू उनमें रहता है। वह इस गांव को ताऊन की लूटमार और उसकी तबाही से बचा लेगा। यदि मुझे तेरा पास न होता और तेरा सम्मान दृष्टिगत न होता तो मैं इस गांव को तबाह कर देता। मैं दयालु हूं जो दुख को दूर करने वाला है मेरे रसूलों को मेरे पास कुछ भय और ग़म नहीं मैं निगाह रखने वाला हूं। मैं अपने रसूल के साथ खड़ा हूंगा और उसकी निन्दा करूंगा जो मेरे रसूल की निन्दा करता है। मैं अपने समयों को विभाजित कर दूंगा कि वर्ष का कुछ भाग तो मैं प्रतीक्षा करूंगा। अर्थात् ताऊन से लोगों को मारूंगा और वर्ष का कुछ भाग रोज़ा रखूंगा। अर्थात् अमन रहेगा और ताऊन कम हो जाएगी या बिल्कुल नहीं रहेगी मेरा प्रकोप भड़क रहा है, बीमारियां फैलेंगी, और प्राणों की क्षति होगी परन्तु वे लोग जो ईमान लाएंगे और ईमान में कुछ दोष नहीं होगा वे अमन में रहेंगे और उनकी मुक्ति (छुटकारे) का मार्ग मिले यह मत सोचो कि अपराधी बचे हुए हैं। हम उनकी पृथ्वी के निकट आते जाते हैं। मैं अन्दर ही अन्दर अपनी सेना तैयार कर रहा हूं अर्थात् ताउन के कीटाणुओं का पोषण कर रहा हूं। अतः

शेष हाशिया - बेटा बनाने से पवित्र है, तथापि उपमाओं के रंग में उसके कलाम में बहुत कुछ पाया जाता है। तो उपमाओं का अनुकरण करने से बचो कि तबाह हो जाओ। और मेरे बारे में स्पष्ट तर्कों में से यह इल्हाम है जो बराहीन अहदमिदया में दर्ज है قل انّما انا بشرٌ مِثلکم یوحیٰ اِلَیَّ انّما الٰھُکم الہ واحد الخیر کلہ فی القرآن इसी से

वे अपने घरों में ऐसे सो जाएंगे जैसा कि एक ऊंट मरा रह जाता है। हम उनको अपने निशान पहले तो दूर-दूर के लोगों में दिखाएंगे और फिर स्वंय उन्हीं में हमारे निशान प्रकट होंगे। मैंने तुझ से एक क्रय-विक्रय किया है। अर्थात् एक वस्तु मेरी थी तू उसका मालिक बनाया गया और एक वस्तु तेरी थी जिस का मैं मालिक बन गया। तू भी उस क्रय-विक्रय का इक़रार कर और कह दे कि ख़ुदा ने मुझ से क्रय-विक्रय किया। तू मुझ से ऐसा है जैसा कि सन्तान। तू मुझ में से है और मैं तुझ में से हूं। वह समय समीप है कि मैं तुझे ऐसे मुक़ाम पर खड़ा करूंगा कि संसार तेरी प्रशंसा और यशोगान करेगा। श्रेष्ठता तेरे साथ है और अधमता तेरे शत्रुओं के साथ अतः सब्र कर यहां तक कि वादे का दिन आ जाए। ताऊन पर एक ऐसा समय भी आने वाला है कि उसमें कोई भी गिरफ़्तार नहीं होगा। अर्थात् अन्ततः भलाई और कुशलता है।★

★**हाशिया :-** पर्याप्त समय हुआ कि इस से पहले ख़ुदा ने मुझे ताऊन के बारे में दूसरे की कहानी के तौर पर यह ख़बर दी थी يا مسيح عدوانا परन्तु आज 21 अप्रैल 1902 ई. है उसी इल्हाम को पुनः इस प्रकार फ़रमाया गया يا مسيح الخلق عدوانا لن ترى من بعد مرادنا و فسادنا अर्थात् हे ख़ुदा के मसीह जो मख़्लूक़ की ओर भेजा गया हमारी शीघ्र ख़बर ले और हमें अपनी सिफ़ारिश से बचा। तू इसके बाद हमारे पापी तत्त्वों को नहीं देखेगा और न हमारा उपद्रव कुछ शेष रहेगा अर्थात् हम सीधे हो जाएंगे और गालियां बकना तथा अपशब्द निकालना छोड़ देंगे। यह ख़ुदा का कलाम बराहीन अहमदिया के उस इल्हाम के अनुसार है कि अन्तिम दिनों में हम लोगों पर ताऊन भेजेंगे। जैसा कि फ़रमाया- كذلك مننّا على يوسف لنصرف عنه السوء و الفحشاء अर्थात् हम ताऊन के साथ इस यूसुफ़ पर यह उपकार करेंगे कि गालियां देने वाले लोगों का मुंह बन्द कर देंगे ताकि वे डरकर गालियों से रुक जाएं। उन्हीं दिनों

अब इस सम्पूर्ण वह्यी से तीन बातें सिद्ध हुई हैं –

(1) प्रथम यह कि ताऊन संसार में इसलिए आई है कि ख़ुदा के मसीह मौऊद से न केवल इन्कार किया गया अपितु उसे दु:ख दिया गया। उसको क़त्ल करने के लिए योजनाएं बनाई गईं, उसका नाम काफ़िर और दज्जाल रखा गया। तो ख़ुदा ने न चाहा कि अपने रसूल को बिना गवाही के छोड़ दे। इसलिए उस ने आकाश और पृथ्वी दोनों को उसकी सच्चाई का गवाह बना दिया। आकाश ने चन्द्र ग्रहण और सूर्य-ग्रहण से गवाही दी जो रमज़ान में हुए और पृथ्वी ने ताऊन के साथ गवाही दी ताकि ख़ुदा का वह कलाम पूरा हो जो बराहीन अहमदिया में है और वह यह है –

قل عندی شھادۃ من اللّٰہ فھل انتم تؤمنون۔
قل عندی شھادۃ من اللّٰہ فھل انتم تسلمون

अर्थात् मेरे पास ख़ुदा की गवाही है तो क्या तुम ईमान लाओगे या नहीं और मैं पुन: कहता हूं कि मेरे पास ख़ुदा की गवाही है तो क्या तुम स्वीकार करोगे या नहीं। पहली गवाही से अभिप्राय आकाश की गवाही है जिसमें कोई जब्र नहीं इसलिए इस में تؤمنون का शब्द प्रयोग किया गया और दूसरी गवाही पृथ्वी की है अर्थात् ताऊन की जिसमें जब्र मौजूद है कि भय देकर इस जमाअत में दाख़िल करती है। इसलिए इसमें تُسلمون का शब्द प्रयोग किया गया।

शेष हाशिया - के बारे में ख़ुदा का यह कलाम है जिसमें ज़मीन के कलाम से मुझे सूचना दी गई। और वह यह है- یاولی اللّٰہ کنتُ لَا اعرفک अर्थात् हे ख़ुदा के वली मैं इस से पहले तुझे नहीं पहचानती थी। इसका विवरण यह है कि कश्फ़ी तौर पर ज़मीन मेरे सामने की गई और उसने यह कलाम किया कि मैं अब तक तुझे नहीं पहचानती थी कि तू रहमान ख़ुदा का वली है। इसी से

(2) द्वितीय बात जो इस वह्यी से सिद्ध हुई वह यह है कि यह ताऊन इस हालत में कम होगी कि जब लोग ख़ुदा के चुने हुए को स्वीकार कर लेंगे और कम से कम यह कि शरारत, कष्ट देने और गाली देने से रुक जाएंगे। क्योंकि बराहीन अहमदिया में ख़ुदा तआला फ़रमाता है – कि मैं अन्तिम दिनों में ताऊन भेजूंगा ताकि मैं उन पापियों और दुष्टों का मुंह बन्द कर दूं जो मेरे रसूल को गालियां देते हैं। असल बात यह है कि केवल इन्कार इस बात का कारण नहीं हो ताकि एक रसूल के इन्कार से संसार में कोई तबाही भेजी जाए। अपितु यदि लोग शालीनता और सभ्यतापूर्वक ख़ुदा के रसूलों का इन्कार करें और अत्याचार तथा गालियां न दें तो उनका दण्ड क़यामत में निर्धारित है। और संसार में रसूलों की सहायता में जितना संक्रामक रोग भेजा गया है वह केवल इन्कार से नहीं अपितु बुराइयों का दण्ड है। इसी प्रकार अब भी जब लोग गालियां, अत्याचार, अन्याय और अपने पापों से रुक जाएंगे और उनमें सुशील लोगों जैसा व्यवहार पैदा हो जाएगा तब यह चेतावनी समाप्त कर दी जाएगी। परन्तु इस अवसर पर बहुत से भाग्यशाली लोग ख़ुदा के रसूल को स्वीकार कर लेंगे और आकाशीय बरकतों से भाग लेंगे और पृथ्वी भाग्यशालियों से भर जाएगी।

(3) तृतीय बात जो इस वह्यी से सिद्ध हुई है वह यह है कि ख़ुदा तआला बहरहाल जब तक कि ताऊन संसार में रहे, यद्यपि सत्तर वर्ष तक रहे क़ादियान को उसकी भंयकर तबाही से सुरक्षित रखेगा क्योंकि यह उसके रसूल का केन्द्र है और यह समस्त उम्मतों के लिए निशान है।

अब यदि ख़ुदा तआला के इस रसूल और इस निशान से किसी को इन्कार हुआ और ख़याल हो कि केवल रस्मी नमाज़ों और दुआओं से या मसीह की इबादत (उपासना) से या गाय के कारण या वेदों के ईमान से विरोध, दुश्मनी और इस रसूल की अवज्ञा के बावजूद ताऊन दूर हो सकती है तो यह विचार बिना सबूत स्वीकार करने योग्य नहीं। तो जो व्यक्ति इन समस्त सम्प्रदायों में से अपने धर्म की सच्चाई का सबूत देना चाहता है तो अब बहुत उत्तम अवसर है जैसे ख़ुदा की ओर से समस्त धर्मों की सच्चाई या झूठ को पहचानने के लिए एक प्रदर्शनी स्थल निर्धारित किया गया है और ख़ुदा ने सर्वप्रथम अपनी ओर से पहले क़ादियान का नाम ले दिया है। अब यदि आर्य लोग वेद को सच्चा समझते हैं तो उनको चाहिए कि बनारस के बारे में जो वेद के पढ़ाने का मूल स्थान है एक भविष्यवाणी कर दें कि उनका परमेश्वर बनारस को ताऊन से बचा लेगा और सनातन धर्म वालों को चाहिए कि किसी ऐसे शहर के बारे में जिसमें गाएं बहुत हों। उदाहरणतया अमृतसर के बारे में भविष्यवाणी कर दें कि गायों के कारण उसमें ताऊन नहीं आएगी। यदि गाय अपना इतना चमत्कार दिखा दे तो कुछ आश्चर्य नहीं कि इस चमत्कारी जानवर के प्राणों को सरकार बचा दे। इसी प्रकार ईसाइयों को चाहिए कि कलकत्ता के बारे में भविष्यवाणी कर दें कि उसमें ताऊन नहीं पड़ेगी क्योंकि ब्रिटिश भारत का बड़ा बिशप कलकत्ता में रहता है। इसी प्रकार मियां शम्सुद्दीन और उनकी अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम के सदस्यों को चाहिए कि लाहौर के बारे में भविष्यवाणी कर दें कि वह ताऊन से सुरक्षित रहेगा और मुंशी इलाही बख़्श एकाउन्टेण्ट जो इल्हाम का दावा

करते हैं उनके लिए भी यही अवसर है कि अपने इल्हाम से लाहौर के बारे में भविष्यवाणी करके अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम को मदद दें और उचित है कि अब्दुल जब्बार और अब्दुल हक़्क़ अमृतसर शहर के बारे में भविष्यवाणी कर दें और चूंकि वहाबी सम्प्रदाय की असल जड़ दिल्ली है इसिलए उचित है कि नज़ीर हुसैन और मुहम्मद हुसैन दिल्ली के बारे में भविष्यवाणी करें कि वह ताऊन से सुरक्षित रहेगी। तो इस प्रकार से जैसे समस्त पंजाब इस घातक रोग से सुरक्षित हो जाएगा और सरकार को भी मुफ़्त में दायित्त्व से निवृत्ति हो जाएगी और यदि लोगों ने ऐसा न किया तो फिर यही समझा जाएगा कि सच्चा ख़ुदा वही ख़ुदा है जिसने क़ादियान में अपना रसूल भेजा।

और अन्ततः स्मरण रहे कि यदि ये सब लोग जिन में मुसलमानों के मुल्हम और आर्यों के पंडित और ईसाइयों के पादरी सम्मिलित हैं चुप रहे तो सिद्ध हो जाएगा कि ये सब लोग झूठे हैं और एक दिन आने वाला है कि क़ादियान सूर्य के समान चमक कर दिखा देगा कि वह एक सच्चे का स्थान है अन्त में मियां शम्सुद्दीन साहिब को याद रहे कि आपने जो अपने विज्ञापन में आयत

(अन्नम्ल - 63) اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ

लिखी है और इस से दुआ की स्वीकारिता की आशा की है। यह आशा सही नहीं है क्योंकि ख़ुदा के कलाम में शब्द مُضْطَر से अभिप्राय वे हानि-पीड़ित हैं जो केवल आज़मायश के तौर पर हानि-पीड़ित हों न कि दण्ड के तौर पर। परन्तु जो लोग दण्ड के तौर पर किसी हानि से निरन्तर ग्रस्त रहते हों वे इस आयत के चरितार्थ नहीं हैं अन्यथा अनिवार्य होता है कि नूह की क़ौम और लूत की क़ौम

तथा फ़िरऔन की क़ौम इत्यादि की दुआएं उस आतुरता (इज़्तिरार) के समय में स्वीकार की जातीं, परन्तु ऐसा नहीं हुआ और ख़ुदा के हाथ ने उन क़ौमों को मार दिया और यदि मियां शम्सुद्दीन कहें कि फिर उन के यथायोग्य कौन सी आयत है तो हम कहते हैं कि यह आयत यथायोग्य है

وَمَا دُعَـٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِیْ ضَلٰلٍ (अलमोमिन-51)

चूंकि संभावना है कि कुछ मंदबुद्धि स्वभाव वाले लोग इस विज्ञापन का मूल उद्देश्य समझने में ग़लती खाएं। इस लिए हम पुनः अपने बुलाने के कर्त्तव्य को अभिव्यक्त कर देते हैं और वह यह है कि यह ताऊन जो देश में फैल रही है किसी अन्य कारण से नहीं अपितु एक ही कारण है और वह यह कि लोगों ने ख़ुदा के उस मौऊद के मानने से इन्कार किया है जो समस्त नबियों की भविष्यवाणी के अनुसार संसार के सातवें हज़ार में प्रकट हुआ है तथा लोगों ने न केवल इन्कार किया अपितु ख़ुदा के इस मसीह को गालियां दीं, काफ़िर कहा, और क़त्ल करना चाहा और जो कुछ चाहा उस से किया। इसलिए ख़ुदा के स्वाभिमान ने चाहा कि उनकी इस घृष्टता, असभ्यता पर उन पर चेतावनी उतारे और ख़ुदा ने पहले पवित्र लेखों में ख़बर दी थी कि लोगों के इन्कार के कारण उन दिनों में जब मसीह प्रकट होगा देश में भयंकर ताऊन पड़ेगी। इसलिए अवश्य था कि ताऊन पड़ती। और ताऊन का नाम ताऊन इसलिए रखा गया है कि यह ताअन (कटाक्ष) करने वालों का उत्तर है। और बनी इस्राईल में हमेशा ताअन के समय में ही पड़ती थी। और ताऊन के अरबी शब्दकोश में अर्थ हैं बहुत ताअन (कटाक्ष) करने वाला। यह इस

बात की ओर संकेत है कि यह ताऊन व्यंग और कटाक्ष की प्रारंभिक हालत में नहीं पड़ती अपितु जब ख़ुदा के मामूर और मुर्सल को सीमा से अधिक सताया जाता है और अनादर किया जाता है तो उस समय पड़ती है। इसलिए हे प्रियजनो! इसका इसके अतिरिक्त कोई उपचार नहीं कि इस मसीह को सच्चे हृदय और निष्कपटतापूर्वक स्वीकार कर लिया जाए। यह तो निश्चित उपचार है और इस से निचले स्तर का उपचार यह है कि उसके इन्कार से मुंह बन्द कर लिया जाए और गालियां देने से जीभ को रोका जाए और हृदय में उसकी प्रतिष्ठा बिठाई जाए। मैं सच-सच कहता हूं कि वह समय आता है अपितु करीब है कि लोग यह कहते हुए कि يا مسيح الخلق عدوانا मेरी ओर दौड़ेंगे। यह जो मैंने वर्णन किया है यह ख़ुदा का कलाम है। इसके मायने ये हैं कि हे जो सृष्टि (मख़्लूक़) के लिए मसीह करके भेजा गया है हमारे इस घातक रोग के लिए सिफारिश कर। तुम निश्चित समझो कि आज तुम्हारे लिए इस मसीह के अतिरिक्त अन्य कोई सिफ़ारिश (अनुशंसा) करने वाला (शफ़ीअ) नहीं बल्कि इसकी शिफ़ाअत आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ही सिफ़ारिश (अनुशंसा) है। हे ईसाई मिशनरियो अब رَبُّنَاالْمَسِيح मत कहो और देखो कि आज तुम में एक है जो उस मसीह से बढ़कर है और हे शिया की क़ौम इस पर आग्रह मत करो कि हुसैन तुम्हारा मुक्ति दिलाने वाला है क्योंकि मैं सच-सच कहता हूं कि आज तुम में से एक है जो उस हुसैन से बढ़ कर है और अगर मैं अपनी ओर से यह बातें कहता हूँ तो मैं झूठा हूँ परन्तु अगर मैं उसके साथ ख़ुदा की गवाही रखता हूँ तो तुम ख़ुदा से मुक़ाबला मत करो ऐसा न हो कि तुम उस से लड़ने

वाले ठहरो। अब मेरी ओर दौड़ो कि समय है। जो व्यक्ति इस समय मेरी ओर दौड़ता है मैं उसे इस से उपमा देता हूं कि जो ठीक तूफ़ान के समय जहाज़ पर बैठ गया, परन्तु जो व्यक्ति मुझे नहीं मानता मैं देख रहा हूं कि वह स्वयं को तूफ़ान में डाल रहा है और उसके पास बचने का कोई सामान नहीं। सच्चा शफ़ीअ (अनुशंसक) मैं हूं जो उस महान शफ़ीअ (अनुशंसक) का प्रतिबिम्ब हूं और उसका ज़िल्ल जिसे इस युग के अन्धों ने स्वीकार न किया और उसका बहुत ही तिरस्कार किया अर्थात् हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। इसलिए ख़ुदा ने इस गुनाह का एक ही शब्द के साथ पादरियों से बदला ले लिया, क्योंकि ईसाई मिशनरियों ने ईसा इब्ने मरयम को ख़ुदा बनाया और हमारे सय्यिद-व-मौला वास्तविक शफ़ीअ (अनुशंसक) को गालियां दीं और गालियों की पुस्तकों से पृथ्वी को अपवित्र कर दिया इसलिए उस मसीह के मुक़ाबले पर जिसका नाम ख़ुदा रखा गया ख़ुदा ने इस उम्मत में से मसीह मौऊद भेजा जो उस पहले मसीह से अपनी सम्पूर्ण शान में बहुत बढ़कर है और उसने इस दूसरे मसीह का नाम ग़ुलाम अहमद रखा। ताकि यह संकेत हो कि ईसाइयों का मसीह कैसा ख़ुदा है जो अहमद के तुच्छ दास से भी मुक़ाबला नहीं कर सकता। अर्थात् वह कैसा मसीह है जो अपने सानिध्य और अनुशंसा के पद में अहमद के ग़ुलाम (दास) से भी बहुत कम है। हे प्यारो! यह बात क्रोध करने की नहीं। यदि इस अहमद के ग़ुलाम को जो मसीह मौऊद करके भेजा गया है तुम उस पहले मसीह से महानतम नहीं समझते और उसी को शफ़ीअ और मुक्ति दिलाने वाला बताते हो तो अब अपने इस दावे

का सबूत दो और जैसा कि इस अहमद के ग़ुलाम के बारे में ख़ुदा ने फ़रमाया-اوی القریۃ لولاالاکرام لھلک المقام जिसके मायने ये हैं कि ख़ुदा ने उस शफ़ीअ का सम्मान व्यक्त करने के लिए इस गांव क़ादियान को ताऊन से सुरक्षित रखा, जैसा कि देखते हो कि वह पांच-छ: वर्ष से सुरक्षित चला आता है। और फ़रमाया कि यदि मैं इस अहमद के ग़ुलाम की महानता और सम्मान प्रकट न करना चाहता तो आज क़ादियान में भी तबाही डाल देता। ऐसा ही आप भी यदि मसीह इब्ने मरयम को वास्तव में सच्चा शफ़ीअ और मुक्ति दिलाने वाला ठहराते हैं। तो क़ादियान के मुक़ाबले पर आप पंजाब के शहरों में से किसी अन्य शहर का नाम★ ले दें कि अमुक शहर हमारे खुदा वन्द मसीह की बरकत और सिफ़ारिश से ताऊन से पवित्र रहेगा और यदि ऐसा न कर सकें तो फिर आप सोच लें कि जिस मनुष्य की इसी संसार में सिफ़ारिश सिद्ध नहीं वह दूसरे लोक (परलोक) में क्योंकर सिफ़ारिश करेगा। और मियां शम्सुद्दीन साहिब स्मरण रखें कि उनका विज्ञापन केवल बेफ़ायदा है और उसका कोई लाभ नहीं होगा और उपचार यही है जो हमने लिखा है। वह याद करें कि इस से पूर्व इन्सानी सरकार में वह और उनकी अंजुमन मेरा मुक़ाबला करके अपमान उठा चुकी है कि उन्होंने उम्महातुलमोमिनीन के बारे में सरकार से दण्ड चाहा था और मैंने इस से मना किया। अन्तत: मेरी राय ही सही हुई। इसी प्रकार अब भी जो कुछ उन्होंने आकाशीय सरकार में मेमोरियल भेजना चाहा है वह भी मात्र बेफ़ायदा, निरर्थक और प्रभावहीन है जैसा कि पहला मेमोरियल था। सच्चा मेमोरियल

★जैसे नारोवाल या बटाला का नाम ले दें। इसी से

यही है जो मैंने लिखा है। अन्ततः आपको यही मानना पड़ेगा।

ہرچہ دانا کند نا داں   لیک بعد از کمال رسوائی

इस स्थान पर मौलवी अहमद हसन साहिब अमरोही को हमारे मुक़ाबले के लिए अच्छा अवसर मिल गया है। हमने सुना है कि वह भी अन्य मौलवियों की तरह अपने मुश्रिकों वाली आस्था की सहायता में कि ताकि किसी प्रकार हज़रत मसीह इब्ने मरयम को मौत से बचा लें और दोबारा उतार कर ख़ातमुलअंबिया बना दें। बड़ी दौड़-धूप से कोशिश कर रहे हैं और उन्हें बुरा मालूम होता है कि सूरह नूर के आशय के अनुसार और सही बुख़ारी की हदीस اماکم منکم के अनुसार और मुस्लिम की हदीस امّکم منکم की दृष्टि से इसी उम्मत-ए-मर्हूमा में से मसीह मौऊद पैदा हो। ताकि मूस्वी सिलसिले के मसीह के मुक़ाबले पर मुहम्मदी सिलसिले का मसीह प्रकट होकर नुबुव्वत-ए-मुहम्मदी की शान को संसार में चमका दे। अपितु यह मौलवी साहिब अपने दूसरे भाइयों की तरह यही चाहते हैं कि वही इब्ने मरयम जिसको ख़ुदा बना कर लगभग पचास करोड़ इन्सान गुमराही के दलदल में डूबा हुआ है दोबारा फ़रिश्तों के कंधों पर हाथ रखे हुए उतरे और ख़ुदाई का एक नवीन दृश्य दिखा कर पचास करोड़ के साथ पचास करोड़ और मिला दे क्योंकि आकाश पर चढ़ते हुए तो किसी ने नहीं देखा था। वही कहावत थी कि

पीरां न में परिन्द मुरीदां मे परानन्द

(पीर तो नहीं उड़ते मुरीद उन्हें उड़ाते हैं।)

परन्तु अब तो समस्त संसार फ़रिश्तों के साथ उतरते देखेगा और पादरी लोग आकर मौलवियों का गला पकड़ लेंगे कि क्या हम

नहीं कहते थे कि यही ख़ुदा है। उस मन्हूस (अशुभ) दिन में इस्लाम का क्या हाल होगा। क्या इस्लाम संसार में होगा? झूठों पर ख़ुदा की लानत जो व्यक्ति श्रीनगर कश्मीर मुहल्ला ख़ानयार में दफ़्न हो चुका है उसे अकारण आकाश पर बिठाया गया। कितना (बड़ा) अन्याय है। ख़ुदा तो अपने वादों की पाबन्दी से हर चीज़ पर सामर्थ्यवान है परन्तु ऐसे व्यक्ति को किसी प्रकार दोबारा संसार में नहीं ला सकता जिसके पहले फ़ित्नः ने ही संसार को तबाह कर दिया है ये मौलवी, इस्लाम के मूर्ख मित्र क्या जानते हैं कि ऐसी आस्थाओं से ईसाइयों को कितनी सहायता पहुंच चुकी है। अब ख़ुदा तआला इब्ने मरयम को कोई नई श्रेष्ठता देना नहीं चाहता अपितु यहां तक कि जितना इस से पूर्व हज़रत मसीह के बारे में बढ़ा चढ़ाकर प्रशंसा की गई है वह भी ख़ुदा को बहुत बुरा लगा है। इसी कारण उसे कहना पड़ा -

ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ (अलमाइदह-117)

अब आकाश की ओर देखना कि कब आकाश से इब्ने मरयम उतरता है बहुत बड़ी मूर्खता है। परन्तु मुझ से पहले जो उलेमा अपनी विवेचनात्मक ग़लती से ऐसा विचार करते रहे कि इब्ने मरयम आकाश से आएगा वह ख़ुदा के नज़दीक असमर्थ हैं उनको बुरा नहीं कहना चाहिए। उनकी नीयतों में विकार नहीं था मनुष्य होने के कारण भूल गए। ख़ुदा उन्हें क्षमा करे क्योंकि उन्हें ज्ञान नहीं दिया गया था और उनकी विवेचनात्मक ग़लती ऐसी थी जैसा कि दाऊद ने ग़नमुल क़ौम के मामले में विवेचनात्मक ग़लती की थी। परन्तु उनके बेटे सुलेमान को ख़ुदा ने विवेक प्रदान कर दिया था जैसा कि इसके बारे में बराहीन अहमदिया में आज से बाईस वर्ष पूर्व यह इल्हाम **ففهمناهاسليمان**

पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ पर मौजूद है। इसके मायने ये हैं जैसा कि बराहीन अहमदिया के उपरोक्त इल्हामों से प्रकट होता है कि लोग यह ऐतराज़ करते हैं कि क्या ये मायने क़ुर्आन और हदीसों के जो तुम करते हो हमारे पहले उलेमा और बुज़ुर्गों को मालूम न थे और तुम्हें मालूम हो गए। इसका उत्तर अल्लाह तआला यह देता है कि हां वास्तव में यही हुआ परन्तु ऐसा होना असंभव नहीं है। तुम्हारे उलेमा तो कोई नबी नहीं थे परन्तु दाऊद ने नबी होकर एक फ़ैसला देने में ग़लती की और ख़ुदा ने उसके बेटे सुलेमान को सच्चे फ़ैसले का उपाय समझा दिया। तो यह सुलेमान जो मसीह मौऊद बनाया गया है इसी प्रकार तुम्हारे बुज़ुर्गों के मुक़ाबले पर सच्चाई पर है जिस प्रकार सुलेमान नबी उस फ़ैसले में अपने पिता दाऊद के मुकाबले में सच्चाई पर था।

यदि मौलवी अहमद हसन साहिब किसी प्रकार नहीं रुकते तो अब समय आ गया है कि उन्हें वास्तव में मुझे झूठा समझते हैं और मेरे इल्हामों को इन्सानों का गढ़ा हुआ झूठ समझते हैं न कि ख़ुदा का कलाम तो आसान तरीक़ा यह है कि जिस प्रकार मैंने ख़ुदा तआला से इल्हाम पाकर कहा है

اِنَّہٗ اٰوَی الْقَرْیَۃَ لَوْلَا الْاِکْرَامُ لَھَلَکَ الْمَقَام

वह انہ اٰوی امروھا लिख दें। मोमिनों की दुआ तो ख़ुदा सुनता है। वह मनुष्य कैसा मोमिन है कि उसके मुक़ाबले पर ऐसे व्यक्ति की दुआ तो सुनी जाती जिसका नाम उसने दज्जाल और बेईमान और मुफ्तरी रखा है परन्तु उसकी अपनी दुआ नहीं सुनी जाती तो जिस हालत में मेरी दुआ स्वीकार करके अल्लाह तआला ने फ़रमा

दिया कि मैं क़ादियान को इस तबाही से सुरक्षित रखूंगा। विशेष तौर पर ऐसी तबाही से कि लोग ताऊन के कारण कुत्तों की तरह मरें, यहां तक कि भागने और अस्त-व्यस्त होने की नौबत आए। इसी प्रकार मौलवी अहमद हसन साहिब को चाहिए कि अपने ख़ुदा से जिस प्रकार हो सके अमरोहा के बारे में दुआ स्वीकार करा लें कि वह ताऊन से पवित्र रहेगा और अब तक यह दुआ अनुमान के करीब भी है। क्योंकि अभी तक अमरोहा ताऊन से दो सौ कोस की दूरी पर है। परन्तु क़ादियान से ताऊन चारों ओर से दो कोस की दूरी पर आग लगा रही है। यह एक ऐसा साफ-साफ मुकाबला है कि इसमें लोगों की भलाई भी है और सच तथा झूठ की पहचान भी। क्योंकि यदि मौलवी अहमद हसन साहिब ख़ुदा की लानत का मुकाबला करके संसार से गुज़र गए तो इस से अमरोहा को क्या लाभ होगा। परन्तु यदि उन्होंने अपने काल्पनिक मसीह के लिए दुआ स्वीकार करा कर ख़ुदा से यह बात स्वीकार करा ली कि अमरोहा में ताऊन नहीं पड़ेगी तो इस स्थिति में न केवल उनकी विजय होगी अपितु समस्त अमरोहा पर उनका ऐसा उपकार होगा कि लोग इसका धन्यवाद नहीं कर सकेंगे। और उचित है कि ऐसे मुबाहले का लेख इस विज्ञापन के प्रकाशित होने से पन्द्रह दिन तक छपे हुए विज्ञापन द्वारा संसार में प्रसारित कर दें जिस का यह विषय हो कि मैं यह विज्ञापन मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद के मुकाबले पर प्रकाशित करता हूं जिन्होंने मसीह मौऊद होने का दावा किया है और मैं जो मोमिन हूं दुआ की स्वीकारिता पर भरोसा करके या इल्हाम पाकर या स्वप्न देख कर यह विज्ञापन देता हूं कि अमरोहा पर अवश्य-अवश्य ही ताऊन की तबाही पड़ेगी, लेकिन

क़ादियान में तबाही पड़ेगी क्योंकि मुफ़्तरी का निवास स्थान है। इस विज्ञापन से संभवत: आगामी जाड़े तक फैसला हो जाएगा या अधिक से अधिक दूसरे तीसरे जाड़े तक और यद्यपि अब मई के महीने से ख़ुदा के नियमानुसार देश में ताऊन कम होती जाएगी और ख़ुदाई रोज़े के दिन आते जाएंगे, परन्तु आशा है कि फिर प्रारंभ नवम्बर 1902 ई. से ख़ुदा तआला अपना रोज़ा खोलेगा। उस समय ज्ञात हो जाएगा कि इस इफ़्तार के समय कौन-कौन मौत के फ़रिश्ते के कब्ज़े में आया। चूंकि मसीह मौऊद के निवास स्थान के समीपतर पंजाब है और मसीह मौऊद की नज़र का पहला महल पंजाबी हैं। इसलिए सर्वप्रथम यह कार्रवाई पंजाब में आरंभ हुई, परन्तु अमरोहा भी मसीह मौऊद के साहस के दरिया से दूर नहीं है। इसलिए इस मसीह की काफ़िरों को मारने वाली फूंक अमरोहा तक भी अवश्य पंहुचेगी। यही हमारी ओर से दावा है। यदि मौलवी अहमद वह क़सम के साथ प्रकाशित होने के बाद जिसे वह क़सम के साथ प्रकाशित करेगा अमरोहा को ताऊन से बचा सका और कम से कम तीन जाड़े अमनपूर्पक गुज़र गए तो मैं ख़ुदा तआला की ओर से नहीं। अब इस से बढ़कर और क्या फ़ैसला होगा। मैं भी ख़ुदा तआला की क़सम खा कर कहता हूं कि मैं मसीह मौऊद हूं और वही हूं जिसका नबियों ने वादा दिया है और मेरी पवित्र क़ुर्आन में ख़बर मौजूद है कि उस समय आकाश पर चन्द्र-ग्रहण और सूर्य-ग्रहण होगा और पृथ्वी पर भयंकर ताऊन पड़ेगी और मेरा यही निशान है कि प्रत्येक विरोधी चाहे वह अमरोहा में रहता है चाहे अमृतसर में और चाहे दिल्ली में, चाहे कलकत्ता में, चाहे लाहौर में, चाहे गोलड़ा में और चाहे बटाला में यदि वह क़सम खा कर कहेगा

कि उसका अमुक स्थान ताऊन से पवित्र रहेगा तो वह स्थान **अवश्य ताऊन** में गिरफ़्तार हो जाएगा, क्योंकि उसने ख़ुदा तआला के मुकाबले पर गुस्ताख़ी की और यह बात कुछ मौलवी अहमद हसन साहिब तक सीमित नहीं अपितु अब तो आकाश से सामान्य मुकाबले का समय आ गया, और जितने लोग मुझे झूठा समझते हैं जैसे शेख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी जो मौलवी करके प्रसिद्ध हैं और पीर मेहर अली शाह गोलड़वी जिसने बहुत से लोगों को ख़ुदा के मार्ग से रोका हुआ है और अब्दुल जब्बार, अब्दुलहक़, अब्दुल वाहिद ग़ज़नवी जो मौलवी अब्दुल्लाह साहिब की जमाअत में से मुल्हम कहलाते हैं और मुंशी इलाही बख़्श साहिब एकाउन्टेण्ट जिन्होंने मेरे विपरीत इल्हाम का दावा करके मौलवी अब्दुल्लाह साहिब को सय्यिद बना दिया है और इतने स्पष्ट झूठ से नफ़रत नहीं की और ऐसा ही नज़ीर हुसैन देहलवी जो अत्याचारी प्रकृति और कुफ्र के फत्वे की बुनियाद रखने वाला है। इन सब को चाहिए कि ऐसे अवसर पर अपने इल्हामों तथा अपने ईमान का पास रख लें और अपने-अपने स्थान के बारे में विज्ञापन दे दें कि वह ताऊन से बचाया जाएगा। इसमें सृष्टि की सर्वथा भलाई और सरकार की हमदर्दी है और इन लोगों की महानता सिद्ध होगी और वली समझे जाएंगे अन्यथा वे अपने झूठे और मुफ़्तरी होने पर मुहर लगा देंगे और हम शीघ्र ही इन्शा अल्लाह इस बारे में एक विस्तृत विज्ञापन प्रकाशित करेंगे।

والسلام علٰی من اتبع الھدٰی

★ ★ ★

जम्मू निवासी चिराग़दीन नामक एक व्यक्ति के बारे में अपनी सम्पूर्ण जमाअत को एक सामान्य सूचना

चूंकि इस व्यक्ति ने हमारे सिलसिले के समर्थन का दावा करके और इस बात को अभिव्यक्त करके कि मैं अहमदिया समुदाय में से हूं जो बैअत कर चुका हूं ताऊन के बारे में शायद एक या दो विज्ञापन प्रकाशित किए हैं और मैंने सरसरी तौर पर उनका कुछ भाग सुना था और आपत्तिजनक भाग अभी सुना नहीं था। इसलिए मैंने अनुमति दी थी कि इसके छपने में कुछ हानि नहीं। परन्तु अफ़सोस कि कुछ ख़तरनाक शब्द और बेहूदा दावे जो उसके हाशिए में थे उसको मैं लोगों की प्रचुरता तथा अन्य ख़यालों के कारण सुन न सका और केवल नेक नीयत के साथ उनके छपने के लिए अनुमति दे दी गई। अब रात जो इसी व्यक्ति चिराग़दीन का एक और निबन्ध पढ़ा गया तो ज्ञात हुआ कि वह निबन्ध बड़ा ख़तरनाक, ज़हरीला और इस्लाम के लिए हानिप्रद है और सर से पैर तक निरर्थक और झूठी बातों से भरा हुआ है इसमें लिखा है कि मैं रसूल हूं और रसूल भी दृढ़ प्रतिज्ञ। और अपना कार्य ये लिखा है ताकि ईसाइयों और मुसलमानों में सुलह कराए तथा क़ुर्आन और इंजील की परस्पर फूट दूर कर दे और इब्ने मरयम का एक हवारी बन कर यह सेवा करे और रसूल कहलाए। प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि पवित्र क़ुर्आन ने कभी यह दावा नहीं किया कि वह इंजील या तौरात से सुलह करेगा अपितु इन किताबों को अक्षरांतरित, परिवर्तित, अधूरी और अपूर्ण ठहराया है और اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ। का विशेष ताज अपने लिए रखा है और हमारा ईमान है कि ये सब किताबें इंजील, तौरात पवित्र क़ुर्आन

की तुलना में कुछ भी नहीं, अपूर्ण, अक्षरांतरित और परिवर्तित हैं और सम्पूर्ण भलाई क़ुर्आन में है जैसा कि आज से बाईस वर्ष पहले बराहीन अहमदिया में यह इल्हाम मौजूद है -

قُلْ اِنَّما اَنا بَشَرٌ مِثْلكُمْ يوحٰى اِلَيَّ انَّمَا اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَاحِد وَالْخَيْرُ كُلّه فِى الْقُرْاٰنَ لَا يَمَسُّهٗ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ

देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ-511, अर्थात् उन को कह दे कि मैं तुम्हारे जैसा एक आदमी हूं मुझ पर यह वह्यी होती है कि ख़ुदा एक है उसका कोई भागीदार नहीं और सम्पूर्ण भलाई क़ुर्आन में है और पवित्र हृदय वाले लोग इसकी वास्तविकता समझते हैं। तो हम क़ुर्आन को छोड़ कर और किस किताब को तलाश करें और उसे क्योंकर अपूर्ण समझ लें। ख़ुदा ने हमें तो यह बताया है कि ईसाई धर्म बिल्कुल मर गया है और इंजील एक मुर्दा और अपूर्ण कलाम (वाणी) है। फिर जीवित को मुर्दा से क्या जोड़। ईसाई धर्म से हमारी कोई सुलह नहीं वह सब का सब रद्दी और खंडित है। और आज आकाश के नीचे पवित्र क़ुर्आन के अतिरिक्त अन्य कोई किताब नहीं। आज से बाईस वर्ष पहले बराहीन अहमदिया में ख़ुदा तआला की ओर से मेरे बारे में यह इल्हाम दर्ज है जो उसके पृष्ठ 241 में देखोगे। और वह यह है -

وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُودُ وَلَا النَّصارىٰ وَخَرَقُواْ لَهٗ بَنِيْنَ وبنات بِغَيرِ علمٍ۔ قل هوالله احد الله الصمد لم يلد ولم يو لك ولم يكن لَّهٗ كُفُوًا احد ويمكرون ويمكر الله واللّٰهُ خير الماكرين۔ الفتنة هٰهنا فاصبر كما صبر اولوالعزم و قل ربّ اَدْخِلنى مُدْخَلَ صِدْقٍ

अर्थात् तेरी और यहूदियों तथा ईसाइयों की कभी परस्पर सुलह नहीं होगी और वे कभी तुझ से राज़ी नहीं होंगे (नसारा से अभिप्राय पादरी और इंजीलों के सहायक हैं) और फिर फ़रमाया कि इन लोगों ने अकारण अपने दिल से ख़ुदा के लिए बेटे और बेटियां बना रखी है और नहीं जानते कि इब्ने मरयम एक विनीत इन्सान था। यदि ख़ुदा चाहे तो ईसा इब्ने मरयम के समान कोई अन्य आदमी पैदा कर दे या उस से अच्छा जैसा कि उसने किया। परन्तु वह ख़ुदा तो एक और भागीदार रहित है जो मौत और पैदा होने से पवित्र है उसके कोई समान नहीं। यह इस बात की ओर संकेत है कि ईसाइयों ने शोर मचा रखा था कि मसीह भी अपने सानिध्य और प्रतिष्ठा के अनुसार भागीदार रहित एक है। अब ख़ुदा बताता है कि देखो मैं उसके समान दूसरा पैदा करूंगा जो उस से भी उत्तम है जो ग़ुलाम अहमद है अर्थात् अहमद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ग़ुलाम है।

ज़िन्दगी बख़्श जाम अहमद है
क्या ही प्यारा यह नाम अहमद है

लाख हों अंबिया मगर बख़ुदा
सब से बढ़कर मुक़ामे अहमद है

बाग़े अहमद से हमने फल खाया
मेरा बुस्तां कलामे अहमद है

इब्ने मरयम के ज़िक्र को छोड़ो
उस से बेहतर ग़ुलाम अहमद है।

ये बातें शाइराना नहीं अपितु वास्तविक हैं और यदि अनुभव की दृष्टि से ख़ुदा का समर्थन मसीह इब्ने मरयम से बढ़कर मेरे साथ न हो तो मैं झूठा हूं। ख़ुदा ने ऐसा किया न मेरे लिए बल्कि अपने नबी के लिए, अत्याचार-पीड़ित के लिए। शेष अनुवाद इस इल्हाम का यह है कि ईसाई लोग कष्ट पहुंचाने के लिए मक्र करेंगे और ख़ुदा भी मक्र करेगा और वे दिन आज़मायश के दिन होंगे और कह मेरे ख़ुदा मुझे पवित्र ज़मीन में स्थान दे। यह एक रूहानी तरीके की हिजरत (प्रवास) है और जैसा कि अब तक मैं समझता हूं इसके मायने ये हैं कि अन्ततः पृथ्वी में परिवर्तन पैदा हो जाएगा और पृथ्वी ईमानदारी और सच्चाई से चमक उठेगी। अब सोच लो कि हम में और ईसाइयों में कितना अधिक अन्तर है। जिस पवित्र अस्तित्त्व को हम सम्पूर्ण सृष्टि से उत्तम समझते हैं उसे ये मुफ़्तरी ठहराते हैं। सुलह तो इस हालत में होती है कि जब दोनों पक्ष कुछ-कुछ छोड़ना चाहें। किन्तु जिस हालत में हमारा धर्म और हमारी किताब ईसाई धर्म को सर से पैर तक अपवित्र और मलिन समझती है और वास्तव में ऐसा ही है तो फिर हम किस बात पर सुलह करें। इतने धार्मिक विरोध का अंजाम सुलह कदापि नहीं है अपितु अंजाम यह है कि झूठा धर्म सर्वथा समाप्त हो जाएगा और पृथ्वी के समस्त सदाचारी लोग सच्चाई को स्वीकार करेंगे तब इस संसार का अन्त होगा हमारा ईसाइयों से धार्मिक रंग में कोई भी मिलाप नहीं अपितु हमारा उत्तर इन लोगों को यही है -

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۝ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۝

(अलकाफ़िरून-2,3)

तो यह कैसी अपवित्र रिसालत है जिसका चिराग़दीन ने दावा

किया है। लज्जाजनक बात है कि एक व्यक्ति मेरा मुरीद कहला कर ये अपवित्र बातें मुंह पर लाए कि मैं मसीह इब्ने मरयम की ओर से रसूल हूं ताकि इन दोनों धर्मों की सुलह कराऊं। लानतुल्लाहि अलल काफ़िरीन। ईसाइयत वह धर्म है जिसके बारे में अल्लाह तआला पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाता है कि करीब है कि उसकी बुराई से पृथ्वी फट जाए, आकाश टुकड़े-टकड़े हो जाएं क्या उस से सुलह? फिर अपूर्ण बुद्धि, अपूर्ण प्रतिभा और अपूर्ण पवित्रता के बावजूद यह भी कहना कि मैं ख़ुदा का रसूल हूं यह ख़ुदा के पवित्र सिलसिले का अपमान है जैसा रिसालत और नुबुव्वत बच्चों का खिलौना है। मूर्खता के कारण यह नहीं समझता कि यद्यपि पहले युगों में कुछ रसूलों के समर्थन में उनके युग में और रसलू भी हुए थे जैसा कि हज़रत मूसा के साथ हारून। परन्तु ख़ातमुल अंबिया और ख़ातमुल औलिया इस ढंग से अपवाद हैं और जैसा कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अन्य कोई मामूर और रसूल नहीं था और समस्त सहाबा एक ही हादी (पथ-प्रदर्शक) के अनुयायी थे इसी प्रकार यहां भी एक ही हादी के सब अनुयायी हैं। किसी को दावा नहीं पहुंचता कि वह नऊज़ुबिल्लाह रसूल कहलाए।

और हमारा आना दो फ़रिश्तों के साथ नहीं अपितु हज़ारों फ़रिश्तों के साथ है और ख़ुदा के नज़दीक वे लोग प्रशंसनीय हैं जो लम्बे वर्षों से मेरी सहायता में व्यस्त हैं, और मेरे नज़दीक और मेरे ख़ुदा के नज़दीक उनकी सहायता सिद्ध हो चुकी है परन्तु चिराग़दीन ने कौन सी सहायता की उसका तो होना न होना बराबर है। लगभग तीस वर्ष से यह सिलसिला जारी है परन्तु उसने केवल कुछ माह से जन्म लिया है और मैं उसकी शक्ल भी अच्छी तरह नहीं पहचान

सकता कि वह कौन है और न वह हमारी संगत में रहा और मैं नहीं जानता कि वह किस बात में मुझे सहायता देना चाहता है। क्या अरबी लिखने के निशान में या क़ुर्आनी मआरिफ़ के वर्णन करने में मेरा सहायक होगा या उन सूक्ष्म बहसों में मेरा सहायक होगा या उन सूक्ष्म बहसों में मेरी सहायता करेगा जो भौतिक और दर्शन शास्त्र के रंग में ईसाइयों तथा अन्य सम्प्रदायों से सामने आती हैं? मैं तो जानता हूं कि वह इन समस्त कूचों से वंचित है और तामसिक वृत्ति की ग़लती ने उसे आत्म प्रशंसा पर तत्पर किया है। अतः आज की तिथि से वह हमारी जमाअत से **कटा हुआ** है जब तक विस्तृत तौर पर अपना **तौबः नामा** प्रकाशित न करे और इस अपवित्र रिसालत के दावे से **हमेशा** के लिए त्यागपत्र देने वाला न हो जाए।

अफ़सोस कि उसने अकारण अपनी शेख़ी से हमारे सच्चे सहायकों का **अपमान** किया और ईसाइयों के दुर्गन्ध युक्त धर्म के मुक़ाबले पर इस्लाम को एक समान श्रेणी का धर्म समझ लिया। इसलिए ऐसे व्यक्ति की हमें कुछ परवाह नहीं। ऐसे लोग हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते और न लाभ पहंचा सकते हैं। हमारी जमाअत को चाहिए कि ऐसे इन्सान से **सर्वथा बचें**। उसके लेखों से हमें पूर्णरूप से पता नहीं था, इसलिए प्रकाशित करने की अनुमति दी थी। अब ऐसे लेखों को **फाड़ देना** चाहिए।

والسلام علی من اتبع الھدٰی

विज्ञापनदाता - विनीत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद, क़ादियान

23 अप्रैल 1902 ई.

प्रकाशक ज़िआउल इस्लाम क़ादियान संख्या - 500

हाशिया न. 1

चिराग़दीन के बारे में मैं यह निबंध लिख रहा था कि थोड़ी सी ऊंघ होकर मुझ को ख़ुदा तआला की ओर से यह इल्हाम हुआ। نزل به جبيز अर्थात् उस पर जबीज़ उतरा और इसी को उसने इल्हाम या स्वप्न समझ लिया। जबीज़ वास्तव में खुश्क और निस्वाद रोटी को कहते हैं जिसमें कोई मिठास न हो और मुश्किल से हलक़ (कंठ) से उतर सके और कृपण और कंजूस पुरुष को भी कहते हैं जिसके स्वभाव में कमीनापन, नीचता और कंजूसी का भाग अधिक हो। इस स्थान पर जबीज़ से अभिप्राय वह हदीसुन्नफ़्स (दिल में आई हुई बात) और अस्त-व्यस्त स्वप्न हैं जिनके साथ आकाशीय प्रकाश नहीं और कंजूसी के लक्षण मौजूद हैं और ऐसे विचार खुश्क घोर परिश्रम (तपस्याओं) का परिणाम या मनोकामना और इच्छा के समय शैतानी इल्क़ा होता है या खुश्की और वात संबंधी मवाद के कारण कभी इल्हामी इच्छा के समय ऐसे विचारों का हृदय पर इल्क़ा हो जाता है और चूंकि उनके नीचे कोई रूहानियत नहीं होती, इसलिए खुदाई परिभाषा में ऐसे विचारों का नाम जबीज़ है और उपचार तौबः, क्षमा याचना और ऐसे विचारों से पूर्णरूप से विमुख होना है अन्यथा जबीज़ की प्रचुरता से पागलपन का ख़तरा है। ख़ुदा प्रत्येक को इस बला से सुरक्षत रखे।

इसी से

हाशिया नं. 2

रात को ठीक चन्द्र-ग्रहण के समय मुझे चिराग़दीन के बारे में मुझे यह इल्हाम हुआ। انی اذیب من یریب मैं फ़ना कर दूंगा मैं फ़ना कर दूंगा मैं नष्ट कर दूंगा मैं प्रकोप उतारूंगा यदि उसने सन्देह किया और उस पर ईमान न लाया तथा रिसालत और मामूर होने के दावे से तौबः न की और ख़ुदा के अन्सार (सहायक जो वर्षों से सेवा और सहायता में व्यस्त और दिन-रात संगत में रहते हैं उन से कोताही की माफी न कराई क्योंकि उसने जमाअत के समस्त निष्कपट लोगों का अपमान किया। हालांकि ख़ुदा ने बार-बार बराहीन अहमदिया में उनकी प्रशंसा की और उनको सब से पहले ईमान लाने वाले लोग ठहराया और कहा -

اصحاب الصفّه وماادراك ماصحاب الصفّة۔

और जबीज़ उस सूखी रोटी को कहते हैं कि जिसे दांत तोड़ न सकें और वह दांत को तोड़े और हलक़ (कंठ) से मुश्किल से उतरे और आंतों को फाड़े तथा आंत्रशूल पैदा करे। तो इस शब्द से बताया कि चिराग़दीन की यह रिसालत और यह इल्हाम केवल जबीज़ और उसके लिए घातक हैं परन्तु दूसरे साथी जिन का अपमान करता है उन पर माइदः उतर रहा है। और उनको ख़ुदा की दया से बड़ा हिस्सा है।

مائدہ چیز یست دیگر خشک نان چیزے دگر
خوردنی ہرگزنباشدنان خشک اے بے ہنر
دوستاں رامائدہ بدہند ازمہرو کرم
پارہ ہائے خشک نان بیگانگان را نیز ہم

نیز ہم پیشِ سگان آں خشک نان مے افگند
مائدہ از لطف ہا پیشِ عزیزان مے برند
ترک کن ایں خشک ناں راہوش کن فرزانہ باش
گر خردمندی پئے آں مائدہ دیوانہ باش

इसी से

★ ★ ★